युवा पीढ़ी में उपेक्षित हो रहा शास्त्रीय संगीत व उसको लोकप्रिय बनाने हेतु कतिपय सुझाव

कु० चारू रानी

वर्तमान में पाश्चात्य संगीत का प्रभाव युवा पीढ़ी पर इतना अधिक पड़ा है कि वह भारतीय शास्त्रीय संगीत से अनभिज्ञ होता जा रहा है। शास्त्रीय संगीत के प्रति समाज में उदासीनता दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। आजकल गिने–चुने लोग ही शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रमों को सुनते हैं, अपितु समाज का एक बड़ा वर्ग शास्त्रीय संगीत से अनभिज्ञ है। हमारे साधक संगीत को ईश्वर की प्राप्ति का साधन मानते आये हैं। संगीत के समान मोहिनी शक्ति संसार में किसी दूसरे कला में निहित नहीं है। कला की रसात्मकता अजर और अमर है, परन्तु कभी–कभी साधकों की अधूरी साधना इसकी आनन्दवर्धक रश्मियों को धुंधला कर देती है। इस अधूरी अथवा दोषपूर्ण साधना ने मानव के बौद्धिक आवरण को ऐसा ढँक दिया है कि हम कला के वास्तविक रूप का दर्शन नहीं कर पाते। वरिष्ठ कलाकारों का मानना है कि आजकल के कलाकारों में हृदय–पक्ष का अभाव है, केवल चमत्कार प्रदर्शन को उन्होंने कला मान लिया है।